Exchange & Finance Available
Zelo Electric Scooter
Maa Bhagwati Services & Enterprises
B. No. 23, Infront of IDBI Bank,
Neemuch 9407423966, 8770664866

मालवा फर्स्ट

MALWA FIRST

स्वाभिमान ही हमारा अभिमान है

Periodicity- Weekly

PRGI Reg. No. MPHIN/2023/90883

संपादक : ऐश्वर्य शर्मा

नीमच, बुधवार

12 अगस्त 2026

वर्ष - 04, अंक - 15 - मूल्य 02 रूपए

पृष्ठ - 04

E-mail: nmh.pawan@gmail.com

Contact: 9407423966, 8770664866

Commodity: Gold 1,51,905 Silver 2,95,000 Crude Oil 5,963 Natural Gas 302.20 Aluminium 232.30 Copper 827.35

नीमच सहित प्रदेश की 10 हवाई पट्टियों को एयरपोर्ट के रूप में विकसित किया जाएगा

भोपाल। केंद्र सरकार की 'उड़ान' (उड़े देश का आम नागरिक) योजना के तहत प्रदेश की 10 हवाई पट्टियों को एयरपोर्ट के रूप में विकसित किया जाएगा। पहले चरण में सिंगरौली सहित पांच को एयरपोर्ट बनाने की स्वीकृति भी रविवार को केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री के. राम मोहन नायडू ने दे दी। सीएम हाउस में आयोजित विमानन विभाग की समीक्षा बैठक में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने उन्हें बताया कि सिंगरौली, सागर, नीमच, छिंदवाड़ा, मंडला, खंडवा, रतलाम, मंदसौर, उमरिया एवं शहडोल हवाई पट्टी को एयरपोर्ट में परिवर्तित करने का प्रस्ताव तैयार किया है। इस पर केंद्रीय मंत्री ने पांच एयरपोर्ट की स्वीकृति देते हुए सिंगरौली में जगह चिह्नित करने

को कहा। बता दें 'उड़ान' योजना में पूरी राशि केंद्र सरकार देती है। प्रदेश सरकार अब सिंगरौली सहित पांच जिलों में एयरपोर्ट बनाने के लिए प्रस्ताव नए सिरे से भारत सरकार को भेजेगी। इनमें शहडोल, छिंदवाड़ा, खंडवा जैसे बड़े और दूरस्थ जिलों को लिया जा सकता है। प्रदेश में औद्योगिक विकास और पर्यटन की दृष्टि से भी जिलों के चयन की प्राथमिकता रहेगी। बैठक में केंद्रीय मंत्री नायडू ने कहा कि उड़ान योजना का अगले दस साल के लिए विस्तार कर दिया गया है। अब यह योजना वर्ष 2036 तक जारी रहेगी।

पीएमश्री एयर एंबुलेंस सेवा का 170 रोगियों को मिला लाभ, 99 प्रतिशत की जान बची – बैठक में मुख्यमंत्री ने कहा कि किसानों को वैश्विक बाजारों से जोड़ने के लिए इंदौर, भोपाल और जबलपुर एयरपोर्ट को कृषि उड़ान योजना में शामिल किया गया है। वहीं विमानन क्षेत्र में करियर बनाने वाले युवाओं के लिए कोर्स फीस का 60 प्रतिशत हिस्सा सरकार वहन करेगी। सीएम ने बताया कि प्रदेश में आठ एयरपोर्ट बन चुके हैं। उज्जैन और शिवपुरी में यह कार्य प्रगति पर है। पीएमश्री एयर एंबुलेंस सेवा देश में सबसे पहले मध्य प्रदेश में प्रारंभ हुई है। 170 से अधिक गंभीर रोगियों को इसका लाभ मिला, इनमें से 99 प्रतिशत मरीजों की जान बचा ली गई। इस सेवा में प्रदेश के हर अंचल से गंभीर मरीजों को उच्च स्वास्थ्य संस्था तक पहुंचाया जाता है। विमानन विभाग के एसीएस संजय कुमार शुक्ल ने बताया कि इस वर्ष जून तक प्रदेश के 50 हजार से अधिक यात्रियों ने हवाई सेवा का लाभ उठाया है।

अब 'वंदे मातरम्' का अपमान होगा अपराध, राष्ट्रपति की मंजूरी के बाद कानून हुआ लागू

नई दिल्ली। राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम् का अपमान करना अब अपराध माना जाएगा। लोकसभा और राज्यसभा से 'वंदे मातरम् बिल' को मंजूरी मिलने के बाद आज मंगलवार, 11 अगस्त को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने भी इस विधेयक को मंजूरी दे दी है, जिससे अब यह कानून बन गया है।

इस कानून के लागू होने से राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम' को जानबूझकर गाने से रोकना या उसमें बाधा डालना अपराध माना जाएगा। इस बिल से इसे वही कानूनी सुरक्षा मिलेगी जो अभी राष्ट्रीय गान को मिलती है।

वंदे मातरम्' पर देश में कानून लागू – राष्ट्रपति की मंजूरी के साथ ही, 'राष्ट्रीय सम्मान के अपमान की रोकथाम (संशोधन) बिल, 2026' अब कानून बन गया है। यह कानून 'वंदे मातरम' को राष्ट्रीय गान 'जन गण मन' के बराबर का दर्जा देता है। राज्यसभा ने इस बिल को 29 जुलाई को मंजूरी दी थी। वहीं लोकसभा में यह बिल 30 जुलाई को पास हुआ था। अब राष्ट्रपति ने भी इस विधेयक को मंजूरी दे दी है, जिससे अब यह विधेयक, कानून बन गया है।

15 अगस्त को लाल किले पर पहली बार गाया जाएगा वंदे मातरम्के – द्रीय गृह मंत्रालय ने बताया कि 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस समारोह में पहली बार लाल किले की प्राचीर से 'वंदे मातरम' गाया जाएगा। इससे पहले, 'राष्ट्रीय सम्मान के अपमान की रोकथाम अधिनियम' के तहत राष्ट्रीय गान (जन गण मन) को जानबूझकर गाने से रोकने या उसे गाते समय किसी सभा में बाधा डालने पर रोक थी। वहीं राष्ट्रीय गीत के लिए ऐसा कोई कानून नहीं था।

राष्ट्रीय गान का अपमान करने पर तीन साल तक की जेल, जुर्माना या दोनों हो सकते थे, जबकि दूसरी बार और उसके बाद हर बार दोषी पाए जाने पर कम से कम एक साल की जेल का प्रविधान था। पुराने कानून में राष्ट्रीय गीत के लिए ऐसी सुरक्षा का प्रावधान नहीं था। बिल को लोकसभा और राज्यसभा में पेश करते वक्त बताया गया, 'अभी 'वंदे मातरम' के गायन के अपमान को रोकने के लिए कोई खास कानूनी प्रावधान नहीं है, जबकि इसे राष्ट्रीय गीत के तौर पर सम्मान दिया जाता है। वहीं अब किसी व्यक्ति को राष्ट्रीय गीत गाने से जानबूझकर रोकने या उसे गाते समय किसी सभा में बाधा डालने से रोकने के लिए, इस अधिनियम की धारा 3 में संशोधन करने का प्रस्ताव है ताकि राष्ट्रीय गीत को भी इसके दायरे में लाया जा सके और ऐसे कामों को दंडनीय बनाया जा सके।

'वंदे मातरम् का सम्मान हो' – बिल में आगे कहा गया कि संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने 24 जनवरी 1950 को कहा था कि बंकिम चंद्र चटर्जी द्वारा रचित गीत 'वंदे मातरम' - जिसने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में ऐतिहासिक भूमिका निभाई थी - को राष्ट्रीय गान 'जन गण मन' के बराबर सम्मान दिया जाएगा और उसका दर्जा भी उसके बराबर होगा। इस साल की शुरुआत में, केंद्रीय गृह मंत्रालय ने निर्देश दिया था कि जब राष्ट्रगीत और राष्ट्रगान एक साथ बजाए जाएं, तो 'वंदे मातरम' के सभी छह पद पहले गाए जाने चाहिए।

28 जनवरी के एक आदेश में, गृह मंत्रालय ने राष्ट्रगीत गाने के लिए प्रोटोकॉल का पहला सेट जारी किया। इसमें निर्देश दिया गया कि राष्ट्रपति के आगमन, राष्ट्रीय ध्वज फहराने और राज्यपालों के भाषण जैसे आधिकारिक कार्यक्रमों में इसके छह पद गाए जाएंगे, जिनकी अवधि 3 मिनट 10 सेकंड होगी।

जनसुनवाई में कलेक्टर ने सुनी आवेदकों की समस्याएं

जनसुनवाई से मजबूत हो रहा जनविश्वास,एक वर्ष में 80.1 प्रतिशत आवेदनों का निराकरण

नीमच । आमजन की समस्याओं का त्वरित एवं प्रभावी निराकरण कर उन्हें शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ दिलाना मध्यप्रदेश शासन की प्राथमिकता है। इसी क्रम में कलेक्ट्रेट सभाकक्ष, नीमच में आयोजित साप्ताहिक जनसुनवाई में कलेक्टर हिमांशु चंद्रा ने जिले के विभिन्न क्षेत्रों से आए 81 आवेदकों की समस्याएं सुनीं और संबंधित अधिकारियों को आवेदनों पर नियमानुसार समय-सीमा में कार्रवाई के निर्देश दिए।

जनसुनवाई के माध्यम से नागरिकों को अपनी समस्याएं सीधे जिला प्रशासन के समक्ष रखने और उनके समाधान की सुविधा मिल रही है। जिला प्रशासन द्वारा जनसुनवाई में प्राप्त आवेदनों के निराकरण की निरंतर मॉनिटरिंग की जा रही है। इसके परिणामस्वरूप विगत एक वर्ष में जनसुनवाई के माध्यम से प्राप्त 4,734 आवेदनों में से 3,793 आवेदनों का निराकरण किया जा चुका है।

यह कुल आवेदनों का 80.1

प्रतिशत है। वहीं विगत ढाई वर्ष में प्राप्त 11,483 आवेदनों में से 10,531 आवेदनों का निराकरण किया गया है।

समय-सीमा में निराकरण पर कलेक्टर का विशेष जोर – जनसुनवाई में सीमांकन, रास्ता विवाद, भूमि संबंधी प्रकरण, पेंशन, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, आर्थिक सहायता, आवास, आधार एवं आयुष्मान कार्ड सहित विभिन्न विषयों से संबंधित आवेदन प्राप्त हुए। कलेक्टर चंद्रा ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि प्रत्येक आवेदन का नियमानुसार परीक्षण कर पात्रता के आधार पर कार्रवाई की जाए। उन्होंने पात्र हितग्राहियों को शासन की योजनाओं का लाभ प्राथमिकता से उपलब्ध कराने के निर्देश भी दिए।

जनसुनवाई में नीमच निवासी राजमल जैन ने मारपीट के मामले में कार्रवाई, नेराल की संतोष बाई ने कृषि भूमि पर कब्जे संबंधी शिकायत तथा जीरन के नरेन्द्र कुमार ने खेत का बंद रास्ता खुलवाने संबंधी आवेदन प्रस्तुत किया। इसी प्रकार आवास, पेंशन, अतिक्रमण, बैंक खाते एवं प्रधानमंत्री आवास योजना से संबंधित आवेदन भी प्राप्त हुए। कलेक्टर ने सभी प्रकरणों को गंभीरता से लेते हुए संबंधित अधिकारियों को आवश्यक कार्रवाई के निर्देश दिए।

कलेक्टर हिमांशु चंद्रा की पहल पर जनसुनवाई में प्राप्त आवेदनों की कार्रवाई की सतत समीक्षा की जा रही है। अधिकारियों को निर्देशित किया गया है कि आवेदन के निराकरण में अनावश्यक विलंब न हो तथा आवेदक को नियमानुसार राहत उपलब्ध कराने की कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। इससे जनसुनवाई आमजन और जिला प्रशासन के बीच संवाद तथा समस्या समाधान का प्रभावी माध्यम बन रही है।

जनसुनवाई का उद्देश्य आमजन की समस्याओं को सुनना ही नहीं, बल्कि उनका नियमानुसार एवं समयबद्ध समाधान सुनिश्चित करना है। जिला प्रशासन का प्रयास है कि प्रत्येक पात्र व्यक्ति को शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ मिले और उसकी समस्या का प्रभावी निराकरण हो।

जनसुनवाई के दौरान मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अमन वैष्णव, अपर कलेक्टर बी.एस. कलेश, एसडीएम पराग जैन, डिप्टी कलेक्टर चंद्र सिंह धार्वे, सुश्री मयूरी जोक, सुश्री श्रुति भयड़िया, अतिरिक्त मुख्य कार्यपालन अधिकारी अरविंद डामोर सहित विभिन्न विभागों के जिला अधिकारी उपस्थित रहे ।

मंदसौर के 100 कावड़ियों की यात्रा दरबार पहुंची : भोलेनाथ का जलाभिषेक किया और सुख-समृद्धि की कामना की

नीमच । नीमच में सावन महीने के अवसर पर जयसिंहपुरा रोड स्थित मंशापूर्ण दरबार में कावड़ यात्रा का समापन हुआ। मंदसौर से पवित्र जल लेकर आए लगभग 100 कावड़ियों ने सोमवार को भगवान भोलेनाथ का जलाभिषेक किया।

यह कावड़ यात्रा रविवार सुबह मंदसौर स्थित प्रसिद्ध भगवान श्री पशुपतिनाथ महादेव मंदिर से प्रारंभ हुई थी। विशेष पूजा-अर्चना के बाद कावड़ियों ने कावड़ में पवित्र जल भरा। यात्रा रविवार देर शाम हिंगोरिया स्थित बालाजी मंदिर पहुंची, जहां कावड़ियों ने रात्रि विश्राम किया। सोमवार को यह यात्रा पूरे उत्साह के साथ नीमच शहर के प्रमुख मार्गों से गुजरी और जयसिंहपुरा रोड स्थित मंशापूर्ण दरबार पहुंची। यहां श्रद्धालुओं ने विधि-विधान से भगवान भोलेनाथ का जलाभिषेक किया और सुख-समृद्धि की कामना की। कावड़ यात्रा के दौरान भक्तिमय माहौल रहा। डीजे पर बज रहे भगवान भोलेनाथ के भजनों पर श्रद्धालु झूमते-नाचते चल रहे थे। लगभग 100 कावड़ यात्री हाथों में कावड़ थामे अनुशासित रूप से आगे बढ़ रहे थे। भगवान भोलेनाथ की झांकी इस आयोजन का मुख्य आकर्षण रही।

पेंशनरों ने बकाया महंगाई राहत, 4 मांगों पर सौंपा ज्ञापन नीमच में कैशलेस स्वास्थ्य बीमा योजना का फायदा देने की मांग की

नीमच । जिलेभर के पेंशनरों ने अपनी रुकी हुई मांगों और राज्य सरकार की अनदेखी के विरोध में कलेक्टोरेट पहुंचकर प्रदर्शन किया। संयुक्त विभाग पेंशनर संघ के तले जुटे पेंशनरों ने तहसीलदार मृगेंद्र सिसोदिया को मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नाम ज्ञापन सौंपा।

संघ के पदाधिकारियों का आरोप है कि मध्य प्रदेश सरकार पेंशनरों के अधिकारों में लगातार कटौती कर उनका आर्थिक नुकसान कर रही है, जिससे इस उम्र में उन्हें भारी आर्थिक तंगी और परेशानियों से जूझना पड़ रहा है।

संघ ने मांग की है कि केंद्र सरकार की तर्ज पर 1 जनवरी 2026 से बनता 2 प्रतिशत बकाया महंगाई राहत का आदेश तुरंत जारी किया जाए। इसके लिए म.प्र. पुनर्गठन अधिनियम 2000 की धारा 49 (6) का बहाना न बनाया जाए। साथ ही, पेंशन से जुड़े कामों में देरी रोकने के लिए प्रदेश के सभी संभागीय और जिला पेंशन दफ्तरों को जैसा है वैसा ही चालू रखने की बात कही गई है।

कैशलेस इलाज और रिकवरी की अवधि घटाने की मांग – पेंशनर संघ ने बिना किसी प्रीमियम कटौती के पेंशनरों को कैशलेस स्वास्थ्य बीमा योजना का फायदा देने की मांग की है। इसके अलावा, कम्यूटेशन (पेंशन की अग्रिम राशि) की रिकवरी अवधि को 15 साल से घटाकर 10 साल 8 महीने करने की मांग रखी गई है।

मांगे पूरी न होने पर बड़े आंदोलन की चेतावनी – ज्ञापन देने वालों में संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष बालचन्द वर्मा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष शांतिलाल कारपेंटर, राष्ट्रीय महासचिव जगमोहन श्रीवास्तव और प्रदेश अध्यक्ष डॉ. एल.एन. शर्मा समेत बड़ी तादाद में पेंशनर शामिल रहे। संघ ने साफ चेतावनी दी है कि अगर सरकार ने उनकी समस्याओं का जल्द हल नहीं निकाला, तो पूरे प्रदेश के पेंशनर बड़े आंदोलन के लिए मजबूर होंगे।

सिंगोली में डेंगू से युवक की मौत :कोटा में इलाज के दौरान पुष्टि, BMO बोले-हमारे पास तो केस ही नहीं

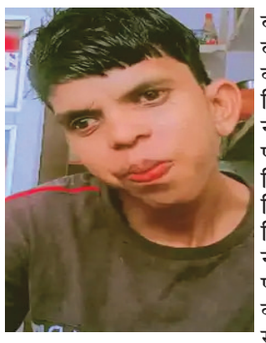

सिंगोली । सरकारी और निजी अस्पतालों में बुखार से पीड़ित मरीजों की बढ़ती संख्या के बीच सिंगोली के वार्ड क्रमांक 10 निवासी दीपक जंगम (26) की कोटा में इलाज के दौरान मौत हो गई। परिजनों के अनुसार, स्थानीय स्तर पर इलाज के बाद हालत गंभीर होने पर उन्हें राजस्थान के कोटा स्थित निजी अस्पताल ले जाया गया था, जहां जांच में डेंगू की पुष्टि हुई। जानकारी के अनुसार, युवक पिता नंदलाल जंगम की तबीयत बिगड़ने पर परिजनों ने सिंगोली के स्थानीय अस्पतालों में इलाज कराया। यहां कराई गई लैब जांच में डेंगू की पुष्टि नहीं हुई थी, लेकिन उनके शरीर में प्लेटलेट्स का स्तर लगातार गिरता रहा। हालत गंभीर होने पर परिजन उन्हें बेहतर इलाज के लिए कोटा ले गए।

कोटा में जांच के बाद डेंगू की पुष्टि – कोटा के निजी अस्पताल में हुई जांच में डेंगू की पुष्टि होने की जानकारी सामने आई। सोमवार शाम इलाज के दौरान युवक की मौत हो गई। घटना के बाद स्थानीय लोगों ने क्षेत्र में मच्छर नियंत्रण और सफाई व्यवस्था को लेकर चिंता जताई। स्थानीय निवासियों का कहना है कि बारिश के बाद कई स्थानों पर पानी जमा है, जिससे मच्छरों के पनपने की स्थिति बनी हुई है। लोगों ने नगर परिषद की ओर से नियमित डीडीटी छिड़काव और फॉगिंग नहीं किए जाने का आरोप लगाया है। स्वास्थ्य विभाग बोले- लार्वा नष्ट करने का अभियान चलाया जाएगा सिंगोली मेडिकल ऑफिसर डॉ. इंतेश व्यास ने बताया कि सिंगोली स्वास्थ्य केंद्र पर अभी तक डेंगू का कोई मरीज दर्ज नहीं हुआ है। उन्होंने कहा कि डेंगू का मामला सामने आने पर स्वास्थ्य विभाग की ओर से तत्काल लार्वा नष्ट करने का अभियान चलाया जाएगा। वहीं, नगर परिषद सिंगोली के सीएमओ ऋषिकंत यादव ने बताया कि बजट के अभाव के कारण सफाई व्यवस्था प्रभावित हुई है। उन्होंने जल्द व्यवस्थाओं में सुधार कर आवश्यक कदम उठाने का आश्वासन दिया।

मंदसौर-नीमच में फिर सक्रिय हुआ मानसून : गांधी सागर का जलस्तर 1298.5 फीट पहुंचा, कई इलाकों में बारिश जारी

मंदसौर । जिले में मानसून ने एक बार फिर रफ्तार पकड़ ली है। सोमवार को सुबह से देर रात तक मंदसौर-नीमच शहर समेत जिले के कई हिस्सों में हल्की से तेज बारिश होती रही। बारिश के चलते तापमान में गिरावट आई और लोगों को उमस व गर्मी से राहत मिली। मंगलवार को भी आसमान में बादल छाए रहे और कई इलाकों में रुक-रुककर बूंदाबांदी का दौर जारी रहा। पिछले 24 घंटे में जिले में 1.56 इंच बारिश दर्ज की गई। मंदसौर-नीमच के अलावा दलौदा, अफजलपुर, सीतामऊ, नाहरगढ़, भानपुरा, गरोठ, सुवासरा, शामगढ़, मल्हारगढ़, पिपलियामंडी, नारायणगढ़, डिगांव और बरखेड़ा सहित अधिकांश क्षेत्रों में बारिश हुई। लंबे समय बाद बारिश की गतिविधियां बढ़ने से किसानों को भी राहत मिली है ।

इस सीजन अब तक 17.36 इंच बारिश – मौसम के आंकड़ों के मुताबिक इस मानसून सीजन में जिले में अब तक 17.36 इंच बारिश दर्ज की जा चुकी है। हालांकि, पिछले साल इसी अवधि में 19.76 इंच बारिश हुई थी। इस लिहाज से इस बार अब तक करीब 2.40 इंच कम बारिश दर्ज हुई है। जिले में बारिश का वितरण समान नहीं रहा है। कुछ क्षेत्रों में अच्छी बारिश हुई है, जबकि कई इलाकों में अब भी अपेक्षाकृत कम वर्षा दर्ज की गई है। आने वाले दिनों में बारिश की गतिविधियां बढ़ने पर इस अंतर में कमी आने की उम्मीद है।

एमपी पुलिस में ऐतिहासिक पदोन्नति... 27,534

पुलिसकर्मियों का प्रमोशन, मोहन कैबिनेट ने दी मंजूरी

भोपाल। मध्य प्रदेश सरकार ने पुलिस महकमे को अब तक का सबसे बड़ा तोहफा दिया है। प्रदेश पुलिस के 58 अलग-अलग संवर्गों (cadres) में रिकॉर्ड 27,534 पुलिस अधिकारियों और कर्मचारियों की पदोन्नति (प्रमोशन) की गई है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में 11 अगस्त को आयोजित मध्य प्रदेश मंत्रिमंडल की महत्वपूर्ण बैठक में राज्य के विकास और सुरक्षा तंत्र को मजबूत करने के लिए कई अहम प्रस्तावों पर मुहर लगाई गई। बैठक में लिए गए निर्णयों की विस्तृत जानकारी स्कूल शिक्षा मंत्री उदय प्रताप सिंह ने प्रेस ब्रीफिंग के दौरान दी।

पुलिस बेड़े में ऐतिहासिक प्रमोशन, खुलेंगे रोजगार के नए अवसर – कैबिनेट ने गृह विभाग के अंतर्गत आने वाले 58 अलग-अलग संवर्गों (कैडरों) के 27,534 पुलिस अधिकारियों और कर्मचारियों की पदोन्नति के प्रस्ताव को अपनी स्वीकृति दे दी है। इस फैसले से पुलिसकर्मियों में लंबे समय से चली आ रही पदोन्नति की प्रतीक्षा समाप्त होगी। इसके साथ ही, बड़े पैमाने पर पदोन्नति होने से निचले स्तर पर खाली हुए पदों के चलते अब प्रदेश में नई पुलिस भर्तियों का मार्ग भी साफ हो गया है। '

हमारी पुलिस देश की सबसे अच्छी पुलिस फोर्स में शामिल' – समारोह में पुलिसकर्मियों को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा 'मध्य प्रदेश के 58 संवर्गों में रिकॉर्ड 27,534 पुलिस अधिकारियों एवं कर्मचारियों की पदोन्नति हुई है। मुझे हमारी पुलिस के सभी अधिकारियों पर गर्व है। जब भी जो अवसर मिला और जो भी दायित्व सौंपा गया, उन्होंने उसे बहुत अच्छे से निभाकर दिखाया।' सीएम ने पुलिसकर्मियों के त्याग की सराहना करते हुए आगे कहा कि पुलिसकर्मी कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए हर चोट और तनाव झेलते हैं, और उनके इस परिश्रम को सम्मान तथा प्रोत्साहन देना सरकार की जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि मध्य प्रदेश पुलिस अपनी देशभक्ति, जनसेवा, साहस और प्रतिबद्धता के बल पर देश की सबसे अच्छी पुलिस फोर्स में शामिल है।

Email: nmh.pawan@gmail.com
Contact: 9407423966, 8770664886

संसदीय-गतिरोध से नहीं चलेगा लोकतंत्र, संवाद ही है समाधान

ललित गर्ग

लोकतंत्र में असहमति स्वाभाविक है, किंतु असहमति को अराजकता में बदल देना लोकतांत्रिक संस्कृति नहीं है। विपक्ष का दायित्व केवल विरोध करना नहीं, बल्कि रचनात्मक सुझाव देना भी है। सरकार को कठघरे में खड़ा करना विपक्ष का अधिकार है, परंतु संसद को ठप कर देना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं कहा जा सकता।

भारतीय लोकतंत्र की सबसे बड़ी शक्ति उसकी संसद है। यही वह सर्वोच्च लोकतांत्रिक मंच है जहां राष्ट्र के वर्तमान और भविष्य से जुड़े विषयों पर गंभीर विमर्श होता है, सरकार जवाबदेह बनती है, विपक्ष जनभावनाओं को स्वर देता है और कानूनों के माध्यम से देश के विकास की दिशा तय होती है। लेकिन अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है कि आज संसद संवाद और सहमति का मंच बनने के बजाय टकराव, आरोप-प्रत्यारोप, नारेबाजी और राजनीतिक हठधर्मिता का अखाड़ा बनती जा रही है। मानसून सत्र में जिस प्रकार लगातार गतिरोध बना हुआ है, उससे केवल संसदीय कार्यवाही ही बाधित नहीं हो रही, बल्कि लोकतंत्र की आत्मा भी आहत हो रही है। संसदीय कार्यमंत्री किरेन रिजीजू और नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के बीच गतिरोध समाप्त करने के लिए हुई बातचीत भी किसी ठोस निष्कर्ष तक नहीं पहुंच सकी। यह स्थिति बताती है कि दोनों पक्ष अपने-अपने राजनीतिक आग्रहों में इतने उलझ गए हैं कि राष्ट्रहित पीछे छूट गया है। विपक्ष की ओर से यह शर्त रखी जा रही है कि जब तक कुछ विशेष मुद्दों पर सरकार सदन में बयान और चर्चा के लिए तैयार नहीं होती, तब तक संसद की कार्यवाही नहीं चलने दी जाएगी। दूसरी ओर सरकार भी अपने विधायी एजेंडे को आगे बढ़ाने पर अडिग है। परिणाम यह है कि संसद का बहुमूल्य समय निरर्थक विवादों की भेंट चढ़ रहा है।

लोकतंत्र में असहमति स्वाभाविक है, किंतु असहमति को अराजकता में बदल देना लोकतांत्रिक संस्कृति नहीं है। विपक्ष का दायित्व केवल विरोध करना नहीं, बल्कि रचनात्मक सुझाव देना भी है। सरकार को कठघरे में खड़ा करना विपक्ष का अधिकार है, परंतु संसद को ठप कर देना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं कहा जा सकता। लोकतंत्र में विरोध की भी मर्यादा होती है। जब विरोध संसद को चलने ही न दे, तब वह लोकतांत्रिक अधिकार नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक दायित्वों की उपेक्षा बन जाता है। पिछले कुछ वर्षों से यह चिंताजनक प्रवृत्ति लगातार बढ़ी है कि संसद सत्र प्रारंभ होने से पहले ऐसे मुद्दे राजनीतिक रूप से उछाले जाते हैं, जिनके आधार पर पूरे सत्र को बाधित किया जा सके। परिणामस्वरूप अनेक महत्वपूर्ण विधेयक बिना पर्याप्त चर्चा के पारित हो जाते हैं अथवा कई विधेयक

लंबित रह जाते हैं। इससे सबसे अधिक नुकसान देश को होता है। संसद का प्रत्येक मिनट करोड़ों रुपये की सार्वजनिक धनराशि से संचालित होता है। यदि वह समय केवल शोर-शराबे और नारेबाजी में बीत जाए तो यह करदाताओं के धन और लोकतांत्रिक विश्वास-दोनों का अपमान है।

लोकतंत्र में संवाद ही समाधान का सबसे प्रभावी माध्यम है। महात्मा गांधी से लेकर अटल बिहारी वाजपेयी तक भारतीय राजनीति की श्रेष्ठ परंपरा संवाद, सहमति और संवेदनशीलता की रही है। आज आवश्यकता इस बात की है कि पक्ष और विपक्ष दोनों अपने-अपने दुराग्रह छोड़कर संवाद की मेज पर बैठें। संसद की गरिमा इस बात में नहीं कि कौन किसे अधिक कठघरे में खड़ा करता है, बल्कि इस बात में है कि राष्ट्रहित के प्रश्नों पर कितनी गंभीरता से विचार किया जाता है। विशेष रूप से कांग्रेस और उसके नेता राहुल गांधी को यह समझना होगा कि लोकतंत्र केवल आंदोलन और विरोध का नाम नहीं है। विपक्ष की भूमिका सरकार को गिराने की नहीं, बल्कि लोकतंत्र को संभालने की होती है। यदि प्रत्येक मुद्दे पर संसद को बाधित करने की रणनीति अपनाई जाएगी तो जनता के बीच यह संदेश जाएगा कि विपक्ष के पास वैकल्पिक नीति और दृष्टि का अभाव है। लोकतंत्र में जनता केवल विरोध नहीं, समाधान भी चाहती है। यदि विपक्ष स्वयं संवाद से दूरी बनाएगा तो ह्यसंवाद से समाधानह्ण का आदर्श केवल नारा बनकर रह जाएगा।

सरकार की भी जिम्मेदारी कम नहीं है। लोकतंत्र में बहुमत का अर्थ मनमानी नहीं होता। सरकार को भी विपक्ष की उचित मांगों को सुनना चाहिए और जहां संभव हो, सहमति का मार्ग निकालना चाहिए। संसद किसी एक दल की नहीं, पूरे राष्ट्र की संस्था है। इसलिए सरकार को भी संवेदनशीलता, धैर्य और व्यापक दृष्टिकोण का परिचय देना होगा। किंतु यदि संवाद का प्रत्येक प्रयास केवल राजनीतिक शर्तों और हठधर्मिता में उलझ जाए तो समाधान की संभावनाएं स्वतः समाप्त हो जाती हैं। आज सबसे बड़ी आवश्यकता राजनीतिक परिपक्वता की है। दुर्भाग्य से भारतीय राजनीति में आग्रह, पूर्वाग्रह और दुराग्रह का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। हर मुद्दे को चुनावी लाभ-हानि के चश्मे से देखा जा रहा है। संसद में बहस कम और राजनीतिक संदेश अधिक दिए जा रहे हैं। यह प्रवृत्ति लोकतंत्र को कमजोर करती है। संसद का उद्देश्य जनकल्याणकारी नीतियों पर विचार करना है, न कि चुनावी रणनीतियों का मंच बन जाना।

देश आज आर्थिक विकास, तकनीकी प्रगति, रोजगार, शिक्षा, कृषि, राष्ट्रीय सुरक्षा, वैश्विक प्रतिस्पर्धा और सामाजिक समरसता जैसी अनेक चुनौतियों के दौर से गुजर रहा है। ऐसे समय संसद का प्रत्येक दिन अत्यंत मूल्यवान है। यदि यह समय केवल राजनीतिक टकराव में व्यतीत होगा तो विकास की गति अवश्य प्रभावित होगी। कानूनों में विलंब, नीतिगत निर्णयों की देरी और संसदीय अस्थिरता का सीधा प्रभाव आम नागरिक के जीवन पर पड़ता है। भारतीय लोकतंत्र की मजबूती इस बात में नहीं कि संसद में कितना शोर हुआ, बल्कि इस बात में है कि वहां कितने सार्थक विचार सामने आए। स्वस्थ लोकतंत्र में सत्ता और विपक्ष प्रतिद्वंद्वी अवश्य होते हैं, किंतु शत्रु नहीं। दोनों का अंतिम लक्ष्य राष्ट्रहित होना चाहिए। यदि राजनीतिक दल इस मूल भावना को भूल जाएंगे तो लोकतंत्र केवल संख्या का खेल बनकर रह जाएगा।

आज आवश्यकता इस बात की है कि सभी राजनीतिक दल आत्ममंथन करें। विपक्ष अपने विरोध को रचनात्मक बनाए, सरकार अपने संवाद को व्यापक बनाए और दोनों मिलकर संसद की प्रतिष्ठा पुनः स्थापित करें। लोकतंत्र का भविष्य टकराव में नहीं, संवाद में सुरक्षित है। संसद की गरिमा नारेबाजी से नहीं, विचार-विमर्श से बढ़ती है। भारत जैसे विशाल लोकतंत्र में यदि संसद ही गतिरोध का प्रतीक बन जाएगी तो जनता का विश्वास कमजोर होगा, जो किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए शुभ संकेत नहीं है। समय की पुकार है कि राजनीति चुनावों की सीमाओं से ऊपर उठकर राष्ट्रनिर्माण की दिशा में आगे बढ़े। पक्ष और विपक्ष दोनों यह स्मरण रखें कि वे किसी दल के नहीं, पहले भारत के प्रतिनिधि हैं। संसद की प्रत्येक घड़ी राष्ट्र की अमूल्य धरोहर है। उसे हठ, अहंकार और राजनीतिक स्वार्थ की भेंट चढ़ाना भविष्य की पीढ़ियों के साथ अन्याय होगा। यदि लोकतंत्र को सशक्त बनाना है, संसद की प्रतिष्ठा पुनर्स्थापित करनी है और भारत को विकसित राष्ट्र बनाना है, तो केवल एक ही मार्ग है-संवाद, सहमति और राष्ट्रहित। यही भारतीय लोकतंत्र की वास्तविक शक्ति है और यही संसदीय मर्यादा का सर्वोच्च आदर्श।

संपादकीय

रिश्तों के जख्म

अक्सर भारतीय समाज में उदाहरण दिया जाता रहा है कि बेटे भले ही बुढ़ापे में मां-बाप की अनदेखी कर दें, लेकिन बेटियां हर मुश्किल वक्त में मां-बाप के साथ खड़ी होती हैं। वे संवेदनशील होती हैं। रिश्तों की कद्र करना जानती हैं। लेकिन सोनीपत के एक वृद्धाश्रम में रहने वाले एक हारे हुए कारोबारी, जीवन के बाद भी अपनों की बेरुखी से हार गये। जिन तीन बेटियों को नाजों से पाला, खूब पढ़ाया-लिखाया और धूमधाम से शादी की, उनमें से कोई भी पिता की चिता को अग्नि देने नहीं आई। वृद्धाश्रम के कर्ता-धर्ताओं के सबल आग्रह के बावजूद कोई बेटी आने को तैयार न हुई। एक बेटी तो नेपाल में थी लेकिन दूसरी आजमगढ़ और तीसरी मुंबई में थी। एक बेटी ने ऑनलाइन कुछ पैसे अंतिम संस्कार के लिये भेजकर अपने कर्तव्यों की इतिश्री कर ली। जबकि बाकी ने आने में असमर्थता जता दी। हां, मुंबई वाली बेटी ने अंतिम संस्कार का वीडियो जल्दी से भेजने को जरूर कहा। घटनाक्रम का दुखांत यह भी है कि बेटियों ने तेरहवीं तक में आने से इनकार कर दिया। वक्त का चक्र देखिए कि कभी मुंबई में करोड़ों का कारोबार करने वाले कारोबारी की अंतिम यात्रा के वक्त कोई अपना साथ न था। कारोबार में घाटे के बाद अपनों ने मुंह फेर लिया। कुछ समय पहले वृद्धाश्रम में रह रही पत्नी भी साथ छोड़ गई। आज हम तमाम समृद्धि व सुख-सुविधाएं जुटाने की होड़ में लगे रहते हैं, लेकिन लगातार रिश्तों की पूंजी गंवाते जा रहे हैं। कोरोना काल में तमाम खून के रिश्तों की त्रासदी तब भी उजागर हुई थी, जब संक्रमण से पीड़ित माता-पिता से खून के रिश्ते भी दूर हो गए थे। यह हमारे समय की त्रासदी है कि तमाम सुख-सुविधाओं में पले बच्चे मुश्किल वक्त में जीवन देने वाले मां-बाप को त्रासदपूर्ण स्थितियों में अकेला छोड़ देते हैं। वहीं यह हमारे समाजविज्ञानियों के लिये गहन आत्ममंथन का विषय है कि क्यों नई पीढ़ी हमारे सनातन जीवन मूल्यों से विमुख होती जा रही है। एक समय था कि पूरी दुनिया में भारत के संयुक्त परिवारों की मिसाल दी जाती थी। पुरानी पीढ़ी भले ही अभावों में पली हो, पिता चाहे व्यवहार में कितने भी सख्त रहे हों, लेकिन बच्चों ने बुढ़ापे की लाठी बनकर अपने तमाम दायित्वों को ईमानदारी से निभाया। दरअसल, संयुक्त परिवार हमें कष्ट सहने, सामंजस्य बनाने और दूसरों के सुख-दुख में शामिल होने का संदेश भी देता था। जीवन के हर क्षेत्र में एक अनुशासन की जरूरत होती है। परिवार में भी यदि मुखिया का अनुशासन कायम न रहे तो बच्चे स्वच्छंद व्यवहार करने लगते हैं। वे आत्मकेंद्रित हो जाते हैं। लेकिन आज हमारे समाज में पश्चिमी संस्कृति ने इतनी गहराई से जड़ें जमा ली हैं कि परिवार संस्था को लेकर हम संवेदनहीन होते चले गये।

चिंतन-मनन

ध्यान से खुल जाते हैं आत्मा के सारे चक्र

उपदेशों और सिद्धांतो की इतनी भरमार है कि परमात्मा को अर्थात अपने जीवन के परम लक्ष्य को ढूंढना घास में से सुई खोजने के बराबर हो गया है। कुछ लोगों के लिए आध्यात्मिकता, माया से मुक्त होने का साधन है तो कुछ लोगों के लिए यह तप और भक्ति से भी अधिक उच्च स्तर का मार्ग है। भले ही परमलक्ष्य तक पहुंचने के विभिन्न मार्ग क्यों न हों, लेकिन योग उनमें किसी प्रकार का भेद नहीं करता। एक योगी के लिए यह संपूर्ण सृष्टि किसी नाटक के समान है। चरित्रों और दृष्यों से प्रभावित हुए बिना इस नाटक का अनुभव करना ही परम उद्देश्य है। आवश्यकता कर्म से ऊपर उठने की है। कृष्ण ने अपनी लीला से इस महत्व को समझाया कि नाटक के मोह में नहीं बंधना है। न ही इससे प्रभावित होना है। यही निष्काम कर्म है। जो सुख- दुख से परे रखता है। मनुष्य में आध्यात्मिक उत्थान की प्रक्रिया शुरू होती और आगे बढ़ती है तो आत्मा विभिन्न चप्रों और जीवन के पहलुओं से होते हुए निरंतर आरोहण करने लगती है। जीवन में भौतिक शरीर की मूल आवश्यकताओं और इच्छाओं से ऊपर उठते हुए उच्चतम शिखरों को छूते हुए अंत में स्वयं से और इस संसार से भी ऊपर उठना होता है। सनातन क्रिया में अष्टांग योग के आठों अंग पूर्णतया सम्मिलित हैं। गुरु के सानिध्य में इस क्रिया को करने से निम्न चप्रों से आज्ञा चप्र व उससे आगे तक पहुंचने का मार्ग स्पष्ट हो जाता है। किसी युग में चप्रों पार करने और अंतिम स्थिति तक तक पहुंचना आसान रहा होगा पर आज हम जिस युग में रह रहे हैं, उसमें ऊंचाई तक पहुंचने के लिए प्रचंड पुरुषार्थ करने की जरूरत रहती है। शास्त्रों और उन्हें जानने वाले ज्ञानीजनों के अनुसार कलियुग के इस अंतिम चरण में हम सब में से अधिकतर व्यक्ति स्वाधिष्ठान के स्तर पर ही अटके हुए हैं। कुछ ही अनाहद तक पहुंच सके हैं और उससे भी कम विशुद्धियां तक का मार्ग तय कर पाए हैं। जो आज्ञा चप्र तक पहुंच चुके हैं, उन्हें आनंद की अनुभूति हो चुकी है और वे दिव्य शक्ति के साथ एक हो चुके हैं। वे गहन चिंतन के साथ अनंत आनंद की अवस्था में हैं। आज्ञा चप्र तक पहुंचने के लिए विभिन्न युगों में कठिन और प्रखर साधन करने होते थे। इस युग में स्थितियां ऐसी नहीं है कि कठिन साधनाएं की जा सकें। एक ध्यान ही ज्यादा समर्थ है। आज्ञा चप्र तक पहुंचने और इसे जागृत करने में भी यही उपाय काम आता है।

बरसते पानी में भीगे मजदूर-किसान, दी गिरफ्तारी 21 मांगों को लेकर नीमच में संयुक्त मोर्चे का प्रदर्शन

नीमच । संयुक्त ट्रेड यूनियन मोर्चा एवं संयुक्त किसान मोर्चा के राष्ट्रव्यापी आह्वान पर सोमवार को नीमच में मजदूरों, किसानों, आंगनबाड़ी, आशा एवं मध्यान्ह भोजन कर्मियों सहित विभिन्न कर्मचारी संगठनों ने प्रदर्शन किया। बरसते पानी के बीच 200 से अधिक प्रदर्शनकारी पैदल यातायात थाने पहुंचे और गिरफ्तारी दी।

प्रदर्शन में आंगनबाड़ी, आशा, मध्यान्ह भोजन कर्मी, ठेका एवं संविदा कर्मचारी, आउटसोर्स कर्मचारी, एमटीएस, नल चालक, खेत मजदूर, किसान, छात्र एवं नौजवान शामिल हुए। प्रदर्शनकारियों ने फोर जीरो चौराहे से रैली निकाली। बारिश के बावजूद प्रदर्शनकारी नारे लगाते हुए यातायात थाने पहुंचे, जहां उन्होंने अपनी गिरफ्तारी दी।

सीटू के जिला महासचिव सुनील शर्मा, कोषाध्यक्ष मुकेश नागदा, इंटक के भगत वर्मा एवं अफीम किसान संघर्ष समिति के भोपाल सिंह ने बताया कि संयुक्त ट्रेड यूनियन मोर्चा, संयुक्त किसान मोर्चा तथा आंगनबाड़ी, आशा एवं मध्यान्ह भोजन कर्मियों ने अलग-अलग ज्ञापन राज्यपाल के नाम थाना प्रभारी जाकिर हुसैन मंसूरी को सौंपे। ज्ञापन का वाचन सीटू के प्रदेश पदाधिकारी शैलेंद्र सिंह ठाकुर ने किया।

नियमितीकरण से एमएसपी तक उठीं मांगें - प्रदर्शनकारियों ने चारों श्रम संहिताओं को रद्द करने, आंगनबाड़ी, आशा, मध्यान्ह भोजन कर्मियों के साथ आउटसोर्स, संविदा, ठेका, अंशकालिक, नल चालक, भृत्य, एमटीएस, विनियमित एवं दैनिक वेतनभोगी कर्मचारियों को नियमित करने की मांग की। नियमितीकरण होने तक न्यूनतम 31 हजार रुपए मासिक वेतन, सामाजिक सुरक्षा और 8 घंटे का कार्यदिवस सुनिश्चित करने की मांग रखी गई। साथ ही सभी श्रेणी के कर्मचारियों को प्रत्येक माह की 7 तारीख तक वेतन भुगतान करने तथा गैर-विभागीय कार्य नहीं कराने की मांग भी ज्ञापन में शामिल रही।

किसानों ने सभी फसलों पर स्वामीनाथन आयोग की सिफारिश के अनुसार C2+50 प्रतिशत पर वैधानिक एमएसपी लागू करने और मंडियों में एमएसपी पर खरीदी की गारंटी का कानून बनाने की मांग की। इसके साथ कर्जमाफी, समय पर खाद-बीज और लगातार बिजली आपूर्ति की मांग भी उठाई गई।

मनरेगा में 200 दिन काम और 700 रुपए मजदूरी की मांग - प्रदर्शनकारियों ने ग्रामीण रोजगार व्यवस्था को मजबूत करने के लिए वीबी-ग्राम-जी कानून को रद्द कर मनरेगा को पुनः बहाल करने, कार्य दिवस और मजदूरी बढ़ाने तथा शहरी रोजगार गारंटी योजना शुरू करने की मांग की। उन्होंने वर्ष में 200 दिन रोजगार और 700 रुपए प्रतिदिन मजदूरी की मांग रखी। बिजली संशोधन विधेयक 2025 को रद्द करने, बिजली के निजीकरण पर रोक लगाने और स्मार्ट मीटर एवं बिजली बिलों के नाम पर कथित लूट बंद करने की मांग भी की गई।

अफीम किसानों की मांगों को भी प्रमुखता से उठाया

अफीम किसान संघर्ष समिति ने अफीम किसानों से जुड़ी मांगें भी प्रमुखता से उठाईं। प्रदर्शनकारियों ने अगस्त में ही अफीम नीति घोषित करने, खरीदी मूल्य 50 हजार रुपए प्रति किलो करने, सीपीएस पद्धति समाप्त करने और वर्ष 1980 से रद्द लाइसेंसों को बहाल करने की मांग की। साथ ही सभी पात्र किसानों को लूणनी-चिरानी के लाइसेंस देने तथा अफीम की खेती एवं प्रसंस्करण निजी हाथों में नहीं देने की मांग रखी गई।

नीमच की बंद सीमेंट फैक्ट्री शुरू करने की मांग

ज्ञापन में नीमच के नयागांव स्थित बंद सीमेंट कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया की सीमेंट फैक्ट्री को पुनः शुरू करने की मांग भी शामिल रही। प्रदर्शनकारियों ने पूर्व कर्मचारियों से संबंधित न्यायालयीन फैसलों को लागू कर रुका भुगतान दिलाने तथा फैक्ट्री की भूमि किसी निजी कारखाने को नहीं देने की मांग की। इसके अलावा एनपीएस समाप्त कर ओपीएस बहाल करने, ईपीएस-95 में वृद्धि, सभी के लिए सामाजिक सुरक्षा एवं न्यूनतम 10 हजार रुपए पेंशन, महंगाई पर रोक, आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धता, पेट्रोल-डीजल व रसोई गैस की कीमतें कम करने सहित कुल 21 मांगें ज्ञापन में रखी गईं। प्रदर्शन में वीणा पथरोड़, किशोर जवेरिया, कुसुम अम्ब, तारा बैरागी, किरण कुमारी, अंजना प्लास, कृपाल सिंह मंडलोई, कृष्णा कांटे, रेखा व्यास, रेखा आर्य, कांता अहीर, शीला कुमारी, शालिनी जयंत, सुनीता धाकड़, रजनी बनोधा, नितेश यादव, राहुल यादव, चंद्रपाल सिंह, नरेंद्र सिंह, परसराम पाटीदार, भंवरलाल, सूरजमल पाटीदार, संजय मकवाना सहित बड़ी संख्या में मजदूर, किसान एवं कर्मचारी मौजूद रहे।

उत्कृष्ट खेती का सम्मान : सर्वोत्तम कृषक पुरस्कार के लिए 31 अगस्त तक आवेदन, ब्लॉक स्तर पर मिलेंगे 10 हजार

नीमच। जिले के किसानों के लिए उत्कृष्ट कृषि कार्य और नवाचार को सम्मान दिलाने का अवसर है। मध्यप्रदेश किसान कल्याण एवं कृषि विकास विभाग द्वारा आत्मा योजना के अंतर्गत वर्ष 2025-26 के लिए सर्वोत्तम कृषक पुरस्कार दिए जाएंगे। इसके लिए जिले के किसानों एवं कृषक समूहों से विकासखंड एवं जिला स्तरीय पुरस्कार के लिए आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। जिले के तीनों विकास खंडों से पांच-पांच सर्वोत्तम किसानों का चयन किया जाएगा। इनमें कृषि, उद्यानिकी, पशुपालन, मत्स्य पालन और कृषि अभियांत्रिकी क्षेत्र से एक-एक किसान शामिल होगा। विकासखंड स्तर पर चयनित प्रत्येक किसान को 10 हजार रुपए की पुरस्कार राशि प्रदान की जाएगी।

वहीं जिला स्तरीय पुरस्कार के लिए इन पांचों क्षेत्रों में चयनित प्रत्येक सर्वोत्तम कृषक को 25 हजार रुपए का पुरस्कार दिया जाएगा।

31 अगस्त तक जमा होंगे आवेदन - विकासखंड एवं जिला स्तरीय सर्वोत्तम कृषक पुरस्कार के लिए किसान 31 अगस्त 2026 तक आवेदन प्रस्तुत कर सकते हैं। गठित चयन समिति द्वारा 15 सितंबर तक विकासखंड स्तर पर सर्वोत्तम किसानों का चयन किया जाएगा। चयनित किसानों के नाम जिला स्तरीय पुरस्कार के लिए राज्य स्तर पर परीक्षण हेतु 30 सितंबर तक भेजे जाएंगे। राज्य स्तर पर परीक्षण एवं चयन की प्रक्रिया 31 अक्टूबर 2026 तक पूरी की जाएगी। चयनित किसानों के प्रमाण-पत्र तैयार किए जाएंगे तथा पूरे प्रदेश में 26 जनवरी 2027 को सर्वोत्तम कृषक पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे।

कलेक्टर होंगे चयन समिति के अध्यक्ष - विकासखंड स्तरीय सर्वोत्तम कृषक पुरस्कार के लिए गठित चयन समिति के अध्यक्ष कलेक्टर होंगे। परियोजना संचालक आत्मा समिति के सदस्य सचिव रहेंगे। उद्यानिकी, पशुपालन एवं मत्स्य पालन विभाग के जिला प्रमुख तथा कृषि विज्ञान केंद्र के प्रभारी अधिकारी समिति में सदस्य होंगे। परियोजना संचालक आत्मा डॉ. यतिन कुमार मेहता ने जिले के किसानों एवं कृषक समूहों से अपील की है कि वे अपने क्षेत्र में किए गए उत्कृष्ट एवं नवाचार पूर्व कृषि कार्यों के आधार पर अधिक से अधिक संख्या में आवेदन करें।

किसान आवेदन पत्र संबंधित विकासखंड के वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी/ब्लॉक टेक्नोलॉजी मैनेजर कार्यालय अथवा उद्यानिकी, पशुपालन, मत्स्य पालन एवं कृषि अभियांत्रिकी विभाग के कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं। पूर्ण रूप से भरे आवेदन बंद लिफाफे में 31 अगस्त 2026 तक संबंधित कार्यालय में जमा किए जा सकेंगे।

अवैध मुरम परिवहन पर कलेक्टर की सख्ती, डंपर मालिक पर 1.06 लाख रुपए की शास्ति

नीम। जिले में अवैध खनन एवं खनिजों के अवैध परिवहन के खिलाफ जिला प्रशासन की कार्रवाई लगातार जारी है। इसी क्रम में कलेक्टर हिमांशु चंद्रा ने मध्यप्रदेश खनिज (अवैध खनन, परिवहन तथा भंडारण का निवारण) नियम, 2022 के तहत कार्रवाई करते हुए अवैध मुरम परिवहन के मामले में वाहन मालिक पर 1 लाख 6 हजार रुपए की शास्ति अधिरोपित की है।

जिला खनिज अधिकारी के प्रतिवेदन के आधार पर हुई कार्रवाई में बताया गया कि 31 जुलाई 2026 को तहसील मनासा के ग्राम रामपुरा रोड पर जांच के दौरान डंपर क्रमांक MP44GA1404 से मुरम का अवैध परिवहन पाया गया था। मामले में वाहन मालिक शोभाराम पिता दुरगालाल चंदेल, निवासी सावनकुंड, तहसील नीमच के विरुद्ध नियमानुसार प्रकरण दर्ज कर कार्रवाई की गई। प्रकरण में रॉयल्टी की 15 गुना राशि 6 हजार रुपए तथा 1 लाख रुपए पर्यावरण क्षतिपूर्ति के रूप में निर्धारित करते हुए कुल 1.06 लाख रुपए की शास्ति अधिरोपित की गई है।

कलेक्टर ने संबंधित वाहन मालिक को निर्धारित अवधि में शास्ति की राशि शासकीय कोष में जमा कराने के निर्देश दिए हैं। राशि जमा होने के बाद नियमानुसार जब्त वाहन को मुक्त किया जाएगा। वहीं निर्धारित समयावधि में राशि जमा नहीं करने पर संबंधित के विरुद्ध भू-राजस्व की भांति वसूली की कार्रवाई की जाएगी।

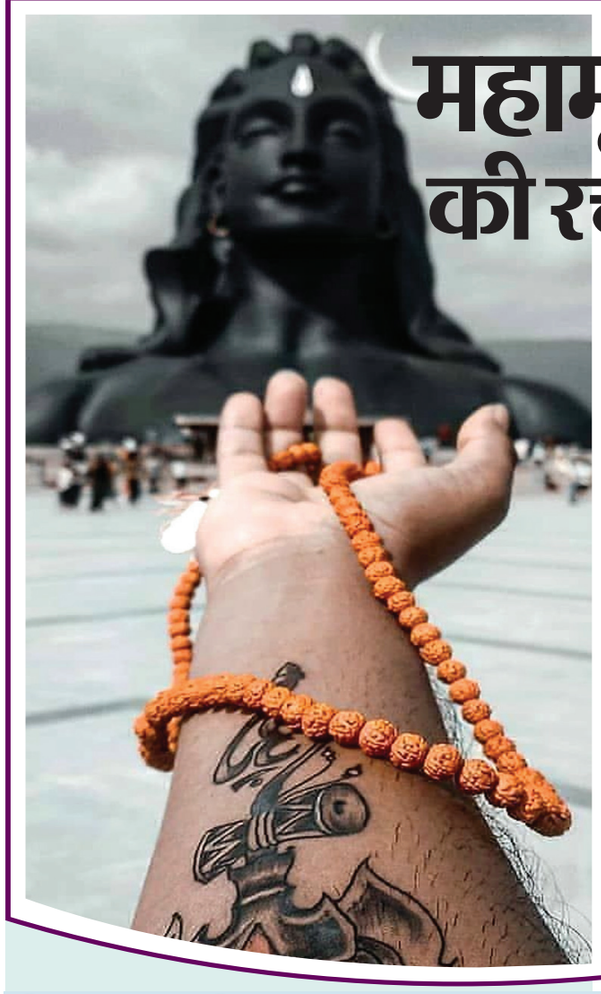

महामृत्युंजय मंत्र की रचना कैसे हुई

महामृत्युंजय मंत्र को लंबी उम्र और अच्छी सेहत का मंत्र कहते हैं। शास्त्रों में इसे महामंत्र कहा गया है। इस मंत्र के जप से व्यक्ति निरोगी रहता है। आइए जानें इस महामंत्र की उत्पत्ति कैसे हुई?

महामृत्युंजय मंत्र की उत्पत्ति के बारे में पौराणिक कथा प्रचलित है। कथा के अनुसार, शिव भक्त ऋषि मृकण्डु ने संतान प्राप्ति के लिए भगवान शिव की कठोर तपस्या की। तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने ऋषि मृकण्डु को इच्छानुसार संतान प्राप्त होने का वर तो दिया परन्तु शिव जी ने ऋषि मृकण्डु को बताया कि यह पुत्र अल्पायु होगा। यह सुनते ही ऋषि मृकण्डु विषाद से घिर गए। कुछ समय बाद ऋषि मृकण्डु को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। ऋषियों ने बताया कि इस संतान की उम्र केवल 16 साल ही होगी। ऋषि मृकण्डु दुखी हो गए. यह देख जब उनकी पत्नी ने दु:ख का कारण पूछा तो उन्होंने सारी बात बताई। तब उनकी पत्नी ने कहा कि यदि शिव जी की कृपा होगी, तो यह विधान भी वे टाल देंगे। ऋषि ने अपने पुत्र का नाम मार्कण्डेय रखा और उन्हें शिव मंत्र भी दिया। मार्कण्डेय शिव भक्ति में लीन रहते। जब समय निकट आया तो ऋषि मृकण्डु ने पुत्र की अल्पायु की बात पुत्र मार्कण्डेय को बताई। साथ ही उन्होंने यह दिलासा भी दी कि यदि शिवजी चाहेंगें तो इसे टाल देंगें। माता-पिता के दु:ख को दूर करने के लिए मार्कण्डेय ने शिव जी से दीर्घायु का वरदान पाने के लिए शिव जी आराधना शुरू कर दी। मार्कण्डेय जी ने दीर्घायु का वरदान की प्राप्ति हेतु शिवजी की आराधना के लिए महामृत्युंजय मंत्र की रचना की और शिव मंदिर में बैठ कर इसका अखंड जाप करने लगे।

महामृत्युंजय मंत्र : ऊँ त्र्यम्बकं स्यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम।
उर्वारुकमिव बन्धनान मृत्योर्मुक्षीय मामृतात

समय पूरा होने पर मार्कण्डेय के प्राण लेने के लिए यमदूत आए परंतु उन्हें शिव की तपस्या में लीन देखकर वे यमराज के पास वापस लौट आए.पूरी बात बताई। तब मार्कण्डेयके प्राण लेने के लिए स्वयं साक्षात यमराज आए। यमराज ने जब अपना पाश जब मार्कण्डेय पर डाला, तो बालक मार्कण्डेय शिवलिंग से लिपट गए। ऐसे में पाश गलती से शिवलिंग पर जा गिरा। यमराज की आक्रमकता पर शिव जी बहुत क्रोधित हुए और यमराज से रक्षा के लिए भगवान शिव प्रकट हुए। इस पर यमराज ने विधि के नियम की याद दिलाई। तब शिवजी ने मार्कण्डेय को दीर्घायु का वरदान देकर विधान ही बदल दिया। सा थ ही यह आशीर्वाद भी दिया कि जो कोई भी इस मंत्र का नियमित जाप करेगा वह कभी अकाल मृत्यु को प्राप्त नहीं होगा।

10 मनोकामना, 10 द्रव्य 10 सरल अभिषेक

शिवजी का अत्यंत प्रिय मास चल रहा है, इस माह में पूरे मन से शिव जी का पूजन करने से हर मनोकामना पूर्ण होती है। आइए जानते हैं किस प्रकार की मनोकामना के लिए शिव शंकर का किस द्रव्य से पूजन करना चाहिए। सभी अभिषेक द्रव्य का फल अलग-अलग है। यहां जानिए.

- गंगाजल या शुद्ध जल- सौभाग्य वृद्धि।
- दुग्ध गाय का- गृह शांति तथा लक्ष्मी प्राप्ति।
- सुगंधित तेल- भोग प्राप्ति।
- सरसों का तेल- शत्रु नाश।
- मीठा जल या दुग्ध- बुद्धि प्राप्ति।
- घी- वंश वृद्धि।
- पंचामृत- मनोवांछित प्राप्ति के लिए।
- गन्ने का रस या फलों का रस- लक्ष्मी तथा ऐश्वर्य प्राप्ति।
- छाछ- ज्वर से छुटकारा।
- शहद- ऐश्वर्य प्राप्ति।

भगवान शिवशंकर करोड़ों सूर्य के समान दीप्तिमान हैं। जिनके ललाट पर चन्द्रमा शोभायमान है। नीले कण्ठ वाले, अभिष्ट वस्तुओं को देने वाले हैं। तीन नेत्रों वाले यह शिव, काल के भी काल महाकाल हैं। कमल के समान सुन्दर नयनों वाले अक्षमाला और त्रिशूल धारण करने वाले अक्षर- पुरुष हैं। यदि क्रोधित हो जाएं तो त्रिलोक को भस्म करने के शक्ति रखते हैं और यदि किसी पर दया कर दें तो त्रिलोक का स्वामी भी बना सकते हैं। यह भयावह भव सागर पार कराने वाले समर्थ प्रभु हैं। भोले नाथ बहुत ही सरल स्वभाव, सर्वव्यापी और भक्तों से शीघ्र ही प्रसन्न होने वाले देव हैं। उनके सामने मानव क्या दानव भी वरदान मागने आये जो उसे भी मुंह मांगा वरदान देने में पीछे नही हटते हैं।

विवेक है शिव का तीसरा नेत्र

शव का अर्थ है कल्याण करने वाला पर उनका दूसरा प्रसिद्ध नाम रुद्र भी है क्योंकि वह दुष्टों को रुलाने वाले हैं। करोड़ों देवी-देवताओं में शिव ही हैं जिन्होंने 3 नेत्र धारण किए हैं। सृष्टि के सृजन, पालन और संहार का दायित्व शिव के पास है। इस प्रकार शिव का एक नेत्र ब्रह्मा अर्थात सृजनकर्ता, दूसरा विष्णु अर्थात पालनकर्ता तीसरा स्वयं रुद्र रूप अर्थात संहारकर्ता। अन्य प्रकार से देखें तो पहला नेत्र धरती, दूसरा आकाश और तीसरा नेत्र बुद्धि के देव सूर्य की ज्योति से प्राप्त ज्ञान-अग्नि का प्रतीक है। ज्ञान जब खुला तो कामदेव भस्म हुआ। अर्थात जब आप अपने ज्ञान और विवेक की आंख खोलते हैं तो कामदेव जैसी बुराई लालच, भ्रम, अंधकार आदि से स्वयं को दूर कर सकते हैं। इसके पीछे कथा भी है। एक बार पार्वती जी ने भगवान शिव के पीछे जाकर उनकी दोनों आंखें हथेलियों से बंद कर दीं। इससे समस्त संसार में अंधकार छा गया क्योंकि भगवान शिव की एक आंख सूर्य है, दूसरी चंद्रमा। अंधकार से संसार में हाहाकार मच गया तब भोले भंडारी ने तुरन्त अपने माथे से अग्नि निकाल कर पूरी दुनिया में रोशनी फैला दी। रोशनी इतनी तेज थी कि इससे हिमालय जलने लगा। इस दृश्य को देखकर पार्वती घबरा गईं तथा तुरन्त अपनी हथेलियां शिव की आंखों से हटा दीं। तब शिव जी ने मुस्कुरा कर अपनी तीसरी आंख बंद की। शिव पुराण के अनुसार पार्वती जी को इससे पूर्व ज्ञान नहीं था कि शिव त्रिनेत्रधारी हैं। इनका दायां नेत्र सूर्य के समान तेजस्वी है। जिस प्रकार सूर्य में उत्पन्न करने की विशेष ऊर्जा है और वह पृथ्वी ही नहीं, अनेक ग्रहों को भी प्रकाशमय करता है। उसी प्रकार शिव का दायां नेत्र भी सृष्टि को जीवन दायक शक्ति प्रदान करता है। स्वयं सूर्य को भी शिव के इसी नेत्र से तेज मिलता है। वैदिक ग्रंथों में शिव एवं चंद्रमा का विशेष संबंध बताया गया है। जलतत्व सोम को अमृततुल्य माना जाता है। जीवन का पोषण जल ही करता है और यही जल तत्व शिव का बायां नेत्र है। शिव का तीसरा नेत्र जो बंद ही रहता है, अग्नि रूप है। यह वही अग्नि है जो सकारात्मक रूप में तो कल्याणकारी है परन्तु यदि इस पर अंकुश न लगाया जाए तो यही विनाश का कारण भी बनती है। शिव अपनी इस शक्ति पर नियंत्रण रखते हैं और इसका इस्तेमाल केवल बुराई के नाश के लिए ही करते हैं। इस संबंध में एक कथा भी है। सृष्टि के समय जीव में रस की प्राप्ति के लिए कामदेव को जिम्मेदारी दी गई परन्तु जब कामदेव ने शिव पर ही अपनी शक्ति का परीक्षण करना चाहा तो शिव ने अपने तीसरे नेत्र की संहारक शक्ति का प्रयोग कर उसे तत्काल भस्म कर दिया। इसी प्रकार जीव को कर्म करने की स्वतंत्रता है और यदि वह अपने अंदर की बुराइयों (काम, क्रोध, लोभ, मोह व अहंकार) पर अपने तीसरे नेत्र का अंकुश रखे, तो वह सदैव सुखी रहेगा परन्तु यदि वह इन पर अंकुश नहीं रख पाता तो यही उसका विनाश कर देती है। शिव और शक्ति एक-दूसरे के पर्याय हैं। इसलिए शिव के तीनों नेत्र शिव का ही प्रतीक हैं, जो क्रमश- गौरी के रूप में जीव को मातृत्व का स्नेह देते हैं, लक्ष्मी के रूप में उसका पोषण करते हैं तथा काली के रूप में उसकी आंतरिक तथा बाहरी बुराइयों का नाश करते हैं। भगवान भोले भंडारी के ललाट पर सुशोभित तीसरा नेत्र असल में मुक्ति का द्वार है जो शिव को तो स्वत- प्राप्त है लेकिन मनुष्य अज्ञान के चलते इसे अपने मस्तक पर देख नहीं पाता। यह दोनों नेत्रों के मध्य इसलिए है क्योंकि यह स्थान पवित्र माना गया है। त्राटक के मध्य कुंडलिनी जागरण का भी विशेष महत्व है। यही स्थान सर्वाधिक ऊर्जावान है। इसी स्थान पर विशेष दबाव अपना प्रभाव दिखाता है। दूसरी ओर शिव के अधखुले नेत्र व्यक्ति के कर्म के साक्षी हैं। इसी कारण शिव को परमयोगी कहा जाता है। गृहस्थ में रह कर भी शिव सृष्टि का नियंत्रण, (सृजन, पालन तथा संहार) स्वतंत्र रूप में करते हैं। स्वयं पर नियंत्रण, अपने कर्मों का सही आकलन ही शिव के तीनों नेत्रों का रहस्य है। शिव का तीसरा नेत्र ही मुक्ति का द्वार है.,

शिवजी योगी से क्यों बने गृहस्थ

भगवान शिव एक योगी हैं, बैरागी है और संन्यासियों को गुरु हैं। वे परिवाज़क है अर्थात जगह जगह जगह घूमते रहते हैं और जब घूमना बंद होता है तो बस समाधी में लीन रहते हैं।

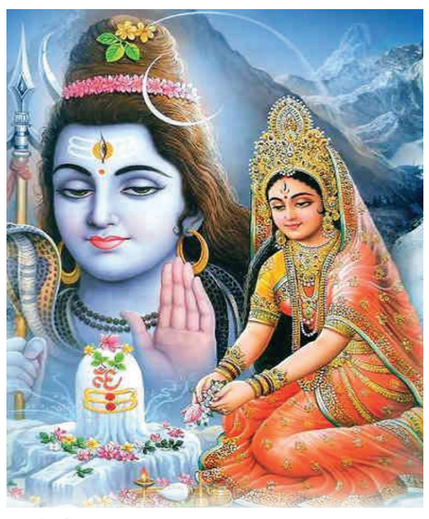

- भगवान शिव महान योगी थे और वे हमेशा ही समाधी और ध्यान में ही लीन रहते थे लेकिन माता पार्वती का ये प्रेम ही था कि योगी बना एक गृहस्थ।
- गृहस्थ का योगी होना जरूरी है तभी वह एक सफल दाम्पत्य जीवन का निर्वाह कर सकता है।
- भगवान शिव के साथ उल्टी गंगा बही। कई लोग ऐसे हैं जो विवाह के बाद उम्र के एक पड़ाव पर जाकर बैरागी बनकर संन्यस्त होकर अपनी पत्नी को छोड़ चले। जैसे गौतम बुद्ध या अन्य कई ऋषि मुनि, परंतु भगवान शिव तो पहले से ही योगी, संन्यासी या कहें कि बैरागी थे।
- यह तो माता पार्वती का तप ही था जो योगी गृहस्थ बन गए। कहना तो यह चाहिए कि माता पार्वती भी तो जोगन थीं। पत्नी के साथ यदि सात जन्म के फेरे लिए हैं तो फिर कैसे इसी जन्म में संन्यास के लिए छोड़कर चले जाएं? भगवान शंकर ने यह सबसे बड़ा उदाहरण प्रस्तुत किया था।
- माता सती ने जब दूसरा जन्म हिमवान के यहां पार्वती के रूप में लिया तब उन्होंने पुन: शिव को पाने के लिए घोर तप और व्रत किया। उस दौरान तारकासुर का आतंक था। उसका वध शिवजी का पुत्र ही कर सकता था ऐसा उसे वरदान था। लेकिन शिवजी तो तपस्या में लीन थे। ऐसे में देवताओं ने शिवजी का विवाह पार्वतीजी से करने के लिए एक योजना बनाई। उसके तहत कामदेव को तपस्या भंग करने के लिए भेजा गया। कामदेव ने तपस्या तो भंग कर दी लेकिन वे खुद भस्म हो गए। बाद में शिवजी ने पार्वतीजी से विवाह किया। इस विवाह में शिवजी बरात लेकर पार्वतीजी के यहां पहुंचे। इस कथा का रोचक वर्णन पुराणों में मिलेगा। शिव को विश्वास था कि पार्वती के रूप में सती लौटेंगी तो पार्वती ने भी शिव को पाने के लिए तपस्या के रूप में समर्पण का एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया।

श्रावण में शिवजी होते हैं शीघ्र प्रसन्न

हिन्दू कैलेंडर के अनुसार चैत्र मास के शुरू होने के बाद पांचवां मास श्रावण मास का है। देवषयन का यह प्रथम चातुर्मास है। इस मास मे कथा भागवत और अनगिनत उत्सव मनाये जाते है। श्रावन मास के प्रत्येक सोमवार को श्रावन सोमवार कहा जाता है। श्रद्धालु पवित्र जल से शिवलिंग को स्नान कराते हैं। फूल, मालाओं से मूर्ति या शिवलिंग को पूजते हैं। मंदिर में 24 घंटे दीप जलते रहते हैं। उत्तर भारत के विभिन्न प्रान्तों से इस महीने शिवभक्त गंगाजल लेने.. यानी कांवड का पवित्र जल लेने हरिद्वार, ऋषिकेश, काशी और गंगासागर की यात्रा पैदल करके श्रावण कृष्ण चतुर्दशी को अपने क्षेत्र के शिवमन्दिर में शिवलिंग का अभिषेक करके पुण्य अर्जित करते हैं। कांवड लाकर रुद्राभिषेक करना बहुत ही कष्टसाध्य तप है जिसे देवगण, मानव, दानव सहित यक्ष किन्नर और साधुगण आदि काल से करते आ रहे हैं। शिव सभी के लिए वरदाता है जो जैसा मांगें उसे वैसी ही सम्पदा दे देते हैं। श्रावण मास में आशुतोष भगवान शंकर की पूजा का विशेष महत्व है। जो प्रतिदिन पूजन न कर सकें उन्हें सोमवार को शिव पूजा अवश्य करनी चाहिए और व्रत रखना चाहिए। सोमवार भगवान शंकर का प्रिय दिन है, अत: सोमवार को शिवाराधना करनी चाहिए। इसी प्रकार मासों में श्रावण मास भगवान शंकर को विशेष प्रिय है। श्रावण में पार्थिव शिवपूजा का विशेष महत्त्व है। अत: इस महीने शिव पूजा या पार्थिव शिवपूजा अवश्य करना चाहिए। इस मास में लघुरुद्र, महारुद्र अथवा अतिरुद्र पाठ कराने का भी विधान है। श्रावणमास में जितने भी सोमवार पड़ते हैं, उन सब में शिवजी का व्रत किया जाता है। इस व्रत में प्रात: गंगा स्नान अथवा किसी पवित्र नदी या सरोवर में अथवा विधिपूर्वक घर पर ही स्नान करके शिवमन्दिर में जाकर स्थापित शिवलिंग या अपने घर में पार्थिव मूर्ति बनाकर यथाविधि षोडशोपचार-पूजन किया जाता है। यथासम्भव विद्वान ब्राह्मण से रुद्राभिषेक भी कराना चाहिए। इस व्रत में श्रावणमाहात्म्य और श्रीशिवमहापुराण की कथा सुनने का विशेष महत्त्व है। पूजन के पश्चात् ब्राह्मण-भोजन कराकर एक बार ही भोजन करने का विधान है। भगवान शिव का यह व्रत सभी मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाला है। मनीषियों का कहना है कि समुद्र मंथन भी श्रावन मास में ही हुआ। इस मंथन मंज 14 प्रकार के तत्व निकले। इसमें जहर को छोड़ कर सभी 13 तत्वों को देवताओं और राक्षसों में वितरित किया गया। इन सभी तत्वों में से निकले जहर को भगवान् शिव पी गये और इसे अपने कंठ में संग्रह कर लिया। इस प्रकार इनका नाम नील कंठ पड़ा। इसके बाद देवताओं ने भगवान शिव को जहर के संताप से बचाने के लिए उन्हें गंगा जल अर्पित किया। इसके बाद से ही शिव भक्त श्रावण मास में भगवान शिव का जलाभिषेक करते हैं। श्रावण मास भगवान शिव का प्रिय मास है। इसलिए भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए अपनाएं जरुरी बातें -

- श्रावन मास में रुद्राक्ष पहनना बहुत ही शुभ माना गया है। इसलिए पूरे मास रुद्राक्ष की माला धारण करें व रुद्राक्ष माला का जाप करें।
- शिव को भभूती लगावें। अपने मस्तक पर भी लगावें।
- शिव चालीसा और आरती का गायन करें।
- महामृत्युंजय मंत्र का जाप करें।
- सोमवार को श्रद्धापूर्वक व्रत धारण करें. (यदि पूरे दिन का व्रत सम्भव न हो तो सूर्यास्त तक भी व्रत धारण किया जा सकता है)
- बेलपत्र, दूध, शहद और पानी से शिवलिंग का अभिषेक करें।

श्रावण मास के अन्य व्रत

अपशकुनों से बचनें के लिए नवविवाहित जोड़ों को मंगलागौरी व्रत धारण करना चाहिए। शुक्रवार को सुहागिन स्त्रियों को वरदलक्ष्मी व्रत (श्रावण शुक्रवार व्रत) धारण करना चाहिए। ओम नम : शिवाय. का जप चलते, फिरते, उठते-बैठते करते रहना चाहिए।

मनचाही उन्नति के लिए श्रावण में शिव को चढ़ाएं ये शुभ प्रसाद

हम सभी जानते हैं कि शिव को भोलेभंडारी और आशुतोष कहा जाता है। भोले यानी मासूम और आशुतोष यानी तुरंत तुष्ट या प्रसन्न होने वाले। शिव को पवित्र और सच्चे भाव से जो अर्पित किया जाता है वह ग्रहण करते हैं शिव को सामान्यत: गेंहू से बनी चीजें अर्पित की जाती हैं। ऐश्वर्य पाने के लिए शिव को मूंग का भोग लगाया जाना चाहिए। मनचाहा जीवनसाथी पाने के लिए शिव को चने की दाल का भोग लगाया जाना चाहिए। शिव को तिल चढ़ाने की भी मान्यता है। शिव को तिल चढ़ाने से पापों का नाश होता है। श्रावण में चढ़ाएं शिव जी को यह प्रसाद

●इमरती ●खीर ●मावा लड्डू ●ड्रायफ्रूट्स ●रबड़ी ●मालपुए ●खोपरापाक ●बूंदी के लड्डू ●बर्फी ●बेसन के व्यंजन ●कलाकंद ●मैसूर पाक ●रसमलाई ●पेड़ा ●घेवर ●सतू की मिठाई ●हलवा ●पेठा ●गुलाब जामुन ●जलेबी ●रसगुल्ला। इसके अलावा नारियल बर्फी, मक्खन बड़ा, मोदक, चमचम, मिल्क केक, पुए, बूंदी आदि।

बिल्वपत्र की जड़ में होता है साक्षात लक्ष्मीजी का वास

शिवजी को बिल्वपत्र, धतूरा और आंकड़ा अर्पित करना बहुत ही शुभ माना जाता है। हिन्दू धर्म में बिल्व अथवा बेल (बिल्ला) पत्र भगवान शिव की आराधना का मुख्य अंग है। शिवजी को अर्पित करने के 12 फायदे।

- कहते हैं शिव को बिल्वपत्र चढ़ाने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है क्योंकि बिल्वपत्र की जड़ में साक्षात लक्ष्मीजी का वास होता है। इसीलिए इसके वृक्ष को श्रीवृक्ष भी कहते हैं। इसकी पूजा करने से धन की प्राप्ति होती है।
- इस वृक्ष की जड़ में घी, अन्न, खीर या मिष्ठान्न दान अर्पित करने से दरिद्रता का नाश होता है और कभी भी धनाभाव नहीं रहता है।
- इस वृक्ष की जड़ का विधिवत पूजन करने से सभी प्रकार के पापों से मुक्ति मिल जाती है।
- यदि संतान सुख पाना चाहते हैं तो शिवलिंग पर इसका फूल, धतूरा, गंध और स्वयं बिल्वपत्र चढ़ाने के बाद इस वृक्ष के जड़ का पूजन करना चाहिए।
- बिल्वपत्र के वृक्ष की जड़ का जल अपने माथे पर लगाने से समस्त तीर्थ यात्राओं का पुण्य प्राप्त होता है।
- बिल्वपत्र की जड़ को पानी में घिसकर फिर उबालकर औषधि के रूप में प्रयोग किया जाता है। कष्टकारी रोगों में भी यह अमृत के समान लाभकारी होती है।
- बिल्वपत्र का सेवन, त्रिदोष यानी वात (वायु), पित्त (ताप), कफ (शीत) व पाचन क्रिया के दोषों से पैदा बीमारियों से रक्षा करता है।
- बिल्वपत्र का सेवन त्वचा रोग और डायबिटीज के बुरे प्रभाव बढ़ने से भी रोकता है व तन के साथ मन को भी चुस्त-दुरुस्त रखता है।
- हिन्दू धर्म में बिल्व वृक्ष के पत्र (पत्ते) शिवलिंग पर चढ़ाए जाते हैं। भगवान शिव इसे चढ़ाने से प्रसन्न होते हैं।
- जो व्यक्ति शिव-पार्वती की पूजा बेलपत्र अर्पित कर करते हैं, उन्हें महादेव और देवी पार्वती दोनों का आशीर्वाद मिलता है।
- यह माना जाता है कि देवी महालक्ष्मी का भी बेल वृक्ष में वास है। जिस घर में एक बिल्व का वृक्ष लगा होता है उस घर में लक्ष्मी का वास बतलाया गया है।
- बिल्व पत्र को शिवजी के तीनों नेत्रों का प्रतीक भी माना जाता है। यह तीन नेत्र भूत, भविष्य और वर्तमान देखते हैं। उसी तरह महाशिवरात्रि के दिन शिवजी को बिल्व पत्र चढ़ाने से समृद्धि, शांति और शीतलता आती है।

चतुर्थी, अष्टमी, नवमी, चतुर्दशी, अमावस्या और किसी माह की संक्राति को बिल्वपत्र नहीं तोडना चाहिए।

बिल्वपत्र चढ़ाने का मंत्र

नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वरूम्मिणे च वरूथिने च।
नम: श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चा हनन्याय च नमो घृश्णवे।
दर्शनं बिल्वपत्रस्य स्पर्शनम पापनाशनम। अघोर पाप संहारं बिल्व पत्रं शिवार्पणम।
त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुधम। त्रिजन्मपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम।
अखण्डै बिल्वपत्रैश्च पूजये शिव शंकरम। कोटिकन्या महादानं बिल्व पत्रं शिवार्पणम।
गृहाण बिल्व पत्राणि सपुश्पाणि महे श्वर। सुगन्धीनि भवानीश शिवत्वंकु सुम प्रिय।

चित्तौड़गढ़ किले की गुफा में विराजे मनोकामना महादेव, सावन सोमवार पर उमड़ा श्रद्धा का सैलाब

नीमच। बैकुंठ धाम स्थित 168 वर्ष प्राचीन मनोकामना महादेव मंदिर में द्वितीय सावन सोमवार के पावन अवसर पर श्रद्धा और भक्ति का अद्भुत नजारा देखने को मिला। सुबह से ही बड़ी संख्या में श्रद्धालु मंदिर पहुंचे और भगवान भोलेनाथ का जलाभिषेक कर पूजा-अर्चना की। इस अवसर पर मंदिर परिसर में चित्तौड़गढ़ किले की आकृति के अंदर बनी गुफा में चमत्कारी मनोकामना महादेव की भव्य झांकी सजाई गई। गुफा में विराजित भोलेनाथ के दर्शन श्रद्धालुओं के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र रहे। भगवान महादेव

की इस अनूठी झांकी ने श्रद्धालुओं का मन मोह लिया।

सावन सोमवार के अवसर पर प्रातःकाल से दोपहर तक श्रद्धालुओं ने भगवान शिव का जलाभिषेक किया। मंदिर में भोलेनाथ को तोपों की सलामी भी दी गई। मंदिर में प्रतिदिन आकर्षक फूलों से सजावट की जाती है, जिससे दर्शन के लिए आने वाले श्रद्धालुओं को आध्यात्मिक वातावरण के साथ मनमोहक दृश्य भी देखने को मिलता है। मंदिर समिति के अनुसार प्रत्येक सोमवार सुबह 5 बजे से दोपहर 1 बजे तक आम श्रद्धालुओं के लिए भगवान मनोकामना महादेव के अभिषेक की व्यवस्था रहती है। सावन माह में मंदिर में विशेष धार्मिक आयोजन और सजावट का क्रम जारी है।

मनोकामना महादेव मंदिर के ट्रस्टी संरक्षक शिव महेश्वरी, सुरेंद्र सेठी, अध्यक्ष दिलीप छाजेड़, सेक्रेटरी रमेश जायसवाल, डॉ. विनोद शर्मा, चंपालाल पाटीदार एवं श्रेयांश लोढ़ा ने सभी धर्मप्रेमी श्रद्धालुओं से मंदिर पहुंचकर भगवान मनोकामना महादेव के दर्शन एवं अभिषेक का लाभ लेने का अनुरोध किया है।

मंडी में ट्रॉली से उपज तौलने के फैसले का विरोध 2000 से अधिक हम्मालों ने एसडीएम को दिया ज्ञापन

नीमच । कृषि उपज मंडी में उपज तौल व्यवस्था को लेकर विवाद सामने आया है। मंडी समिति के एक निर्णय के विरोध में मंगलवार को बड़ी संख्या में हम्माल कलेक्टर कार्यालय पहुंचे। उन्होंने अपनी मांगों को लेकर एसडीएम पराग जैन को ज्ञापन सौंपा।

वाहन-ट्रॉली से तौल के फैसले का विरोध – हम्मालों ने बताया कि मंडी समिति ने सभी उपज की तौल केवल वाहनों और ट्रॉलियों में करने का निर्णय लिया है। उनका कहना है कि इससे करीब 2,000 से 2,500 हम्मालों और उनके परिवारों पर आर्थिक असर पड़ेगा। हम्मालों के अनुसार, मंडी में 1,000 से अधिक पंजीकृत हम्माल हैं और परिवारों सहित करीब 15 हजार लोग इससे प्रभावित हो सकते हैं।

हम्माल प्रतिनिधियों ने कहा कि वाहनों और ट्रॉलियों में उपज की नीलामी बड़े तौल कांटे पर की जा सकती है। हालांकि, जो किसान या व्यापारी ढेरी लगाकर उपज की तौल कराना चाहते हैं, उन्हें इसकी अनुमति दी जाए। उनका कहना है कि इससे हम्मालों को रोजगार मिलता रहेगा और किसान, व्यापारी व हम्माल सभी के हितों का संतुलन बना रहेगा।

एसडीएम ने दिया उचित निर्देश का आश्वासन – ज्ञापन लेने के बाद एसडीएम पराग जैन ने हम्मालों की बात सुनी। उन्होंने आश्वासन दिया कि किसान, व्यापारी और हम्माल सहित सभी पक्षों के हितों को ध्यान में रखते हुए उचित निर्देश जारी किए जाएंगे, ताकि हम्मालों को भी काम करने का अवसर मिल सके।

घी की गुणवत्ता जांच के लिए खाद्य सुरक्षा टीम की कार्रवाई, 2.32 लाख रुपए का घी जब्त

नीमच। खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता और मानकों की जांच के लिए चलाए जा रहे अभियान के तहत खाद्य सुरक्षा टीम ने शनिवार को वीर पार्क रोड स्थित अग्रवाल संस घी डीलर का आकस्मिक निरीक्षण किया। कार्रवाई के दौरान प्रतिष्ठान से श्रीमूल ब्रांड के घी के 8 नमूने लिए गए, जबकि जांच रिपोर्ट आने तक शेष घी को अधिग्रहित कर सीलबंद कर दिया गया।

खाद्य सुरक्षा टीम ने निरीक्षण के दौरान मानव उपभोग के लिए विक्रय हेतु रखे श्रीमूल ब्रांड के शुद्ध घी एवं गाय के घी की अलग-अलग पैकिंग की जांच की। टीम ने खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम, 2006 के तहत 1 लीटर, 500 एमएल, 200 एमएल, 5 किलोग्राम तथा 15 किलोग्राम टीन पैकिंग से कुल 8 नमूने लिए। नमूना कार्रवाई के बाद प्रतिष्ठान में मौजूद शेष घी को अधिग्रहित कर विधिवत सील बंद किया गया। टीम के अनुसार कुल 179 लीटर एवं 302 किलोग्राम घी जब्त किया गया है, जिसकी अनुमानित कीमत करीब 2 लाख 32 हजार रुपए है।

जांच रिपोर्ट आने तक बिक्री पर रोक – खाद्य सुरक्षा टीम द्वारा लिए गए सभी 8 नमूनों को गुणवत्ता एवं मानकों की जांच के लिए राज्य खाद्य परीक्षण प्रयोगशाला, ईदगाह हिल्स, भोपाल भेजा गया है। जांच रिपोर्ट प्राप्त होने तक संबंधित खाद्य पदार्थ का विक्रय नहीं करने के निर्देश दिए गए हैं। जिले में खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए खाद्य सुरक्षा विभाग द्वारा लगातार कार्रवाई की जा रही है। विभाग के अनुसार पिछले कुछ दिनों में घी के कुल 15 नमूने लिए जा चुके हैं तथा करीब 5 लाख रुपए से अधिक मूल्य का घी जब्त किया गया है।

अधिकारियों ने बताया कि खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता और निर्धारित मानकों की जांच का अभियान आगे भी लगातार जारी रहेगा। कार्रवाई में खाद्य सुरक्षा अधिकारी राजू सोलंकी, यशवंत कुमार शर्मा सहित खाद्य सुरक्षा टीम के अन्य सदस्य मौजूद रहे।

ग्रामीण युवक-युवतियों के लिए सुनहरा मौका : ब्यूटी पार्लर से डेयरी तक निःशुल्क प्रशिक्षण, आवास-भोजन भी मुफ्त

नीमच। ग्रामीण क्षेत्र के युवक-युवतियों को स्वरोजगार से जोड़कर आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान, नीमच द्वारा विभिन्न रोजगार मूलक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इनमें ब्यूटी पार्लर, बकरी पालन, सिलाई, डेयरी फार्मिंग, वर्मी कम्पोस्ट एवं कृषि उद्यमिता का प्रशिक्षण निःशुल्क दिया जाएगा। प्रशिक्षण का लाभ नीमच जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले 18 से 50 वर्ष आयु वर्ग के युवक-युवतियां ले सकेंगे। प्रवेश पहले आओ, पहले पाओ के आधार पर दिया जाएगा और इसके लिए पंजीयन शुरू हो चुके हैं।

कब से शुरू होंगे प्रशिक्षण – महिलाओं के लिए ब्यूटी पार्लर प्रशिक्षण 13 अगस्त से 35 दिवस का होगा। बकरी पालन प्रशिक्षण 19 अगस्त से 12 दिवस, जबकि डेयरी फार्मिंग, वर्मी कम्पोस्ट एवं कृषि उद्यमिता प्रशिक्षण 18 अगस्त से 13 दिवस का आयोजित किया जाएगा। महिलाओं के लिए सिलाई प्रशिक्षण 31 दिवस का रहेगा।

प्रशिक्षण के साथ आवास-भोजन भी निःशुल्क – प्रशिक्षणार्थियों के लिए प्रशिक्षण अवधि में आवास, भोजन एवं नाश्ते की निःशुल्क व्यवस्था रहेगी। स्वरोजगार शुरू करने के इच्छुक प्रशिक्षणार्थियों के ऋण आवेदन भी प्रशिक्षण केंद्र पर ही भरवाए जाएंगे। बैंकिंग संबंधी जानकारी एवं ऋण से जुड़ी समस्याओं के समाधान के लिए आवश्यक मार्गदर्शन भी दिया जाएगा। प्रशिक्षण के दौरान पशु चिकित्सा, कृषि, उद्यानिकी एवं अन्य संबंधित विभागों के अनुभवी वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों द्वारा प्रशिक्षण दिया जाएगा। साथ ही विभिन्न ऋण योजनाओं एवं स्वरोजगार योजनाओं की जानकारी भी उपलब्ध कराई जाएगी।

आवेदन के लिए जरूरी दस्तावेज – 4 पासपोर्ट साइज फोटो, आधार कार्ड, बैंक पासबुक, राशन कार्ड एवं अंकसूची की 3-3 छायाप्रतियां लेकर आवेदन जमा करना होगा। इच्छुक अभ्यर्थी आवेदन भारतीय स्टेट बैंक ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान, हवाई पट्टी के सामने, विश्राम भवन के पास, चीताखेड़ा मेन रोड, नीमच में जमा कर सकते हैं। पंजीयन एवं प्रशिक्षण संबंधी जानकारी के लिए सुबह 10:30 से शाम 5:30 बजे तक मोबाइल नंबर 9111053516, 9074201015, 9009684125 एवं 7898187819 पर संपर्क किया जा सकता है।

ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान ने जिले के ग्रामीण युवक-युवतियों से इन निःशुल्क प्रशिक्षण कार्यक्रमों का अधिक से अधिक लाभ उठाकर स्वरोजगार की दिशा में आगे बढ़ने की अपील की है।

RBS GROUP OF INSTITUTION
कॉलेज केम्पस : हर्कियाखाल चौराहा, मंदसौर रोड़, नीमच (म.प्र.)
Ph. (07423) 268268-69-70, M.9425922520, 7869587202, 7694015501 7694015502
NURSING (नर्सिंग) | MGMT & COMMERC | Computer & IT | SOCIAL WORK | PHARMACY
GNM (नर्सिंग) BBA BCA MSW D. PHARMA
B.Sc. (नर्सिंग) MBA B.Sc. (cs)
M.Sc. (नर्सिंग) B.Com (plain) DCA EDUCATION
P.B. B.Sc. (नर्सिंग) B.Com. (Compu.) PGDCA D.Ed B.Ed
SC/ST/OBC वर्ग के विद्यार्थियों को शासकीय नियमानुसार छात्रवृत्ति

12th के बाद सफर जोश का मंजिल कामयाबी की
MPPSC, SSC, BANK
रेलवे, पुलिस की तैयारी कीजिए
और डिप्टी कलेक्टर, तहसीलदार, वाणिज्यिक कर अधिकारी,
SP, DSP, CID इंस्पेक्टर, CBN इंस्पेक्टर, असिस्टेंट कमाण्डेंट,
इन्कम टेक्स इंस्पेक्टर, सब इंस्पेक्टर,
बैंक क्लर्क, PO, मैनेजर आदि बनिये
सोनी कोचिंग क्लासेस ™
ISO 9001 : 2008 Certified
22 वर्षों का अनुभव।
1200 से अधिक छात्रों को नौकरी दिला चुके हैं।
धनीराम सगर मार्केट, गायत्री मंदिर के पास,
भागेश्वर मंदिर रोड, नीमच मो. 9300905061

RRM Group of Institution
Radhadevi Ramchandra Mangal
Group of Institutions
100% Placement | Courses Offered - | Bus Facility Available
BBA, BCA, B.Com, ITI (Electrician/Fitter), B.Sc. Plain
B.Sc Micro Biology, B.Sc. (CS), B.Sc Seed Technology
B.Sc Agriculture, B.Ed, D.Ed, MBA, MSW
Bhatkheda, Mhow-Neemuch Road, Near Neemuch By Pass
Mob. 9406837863, 9424899978, 9425328392

श्री देव वेल्डिंग वर्कस
आवश्यकता है
वर्कशॉप पर काम करने के लिए
वेल्डर, फिटर और हेल्पर
की तुरंत आवश्यकता है
संपर्क करें:
मदन माली - 9669999779
राजमल गायरी - 9926640630
पता: स्टेशन रोड, चर्च के पास, नयागांव-नीमच
पता: स्टेशन रोड, चर्च के पास, नयागांव-नीमच

GYANODAYA UNIVERSITY & GROUP OF INSTITUTES NEEMUCH (M.P.)
27,000+ Alumni | 24 years
Admission Announcement 2026-27
A Leading & Premier University in the Serenity of Neemuch
Vibrant Campus Life with 9000+ Currently Enrolled Students
Highest Package ₹12.75 Lac
730 Placement Offers For Graduates of 2026 as on 5th April 2026
Average Package ₹4.75 Lac
220+ Recruitment Partners
Courses Offered
Pharmacy: D.Pharm, B.Pharm, M.Pharm
Nursing: B.Sc. Nursing, GNM Nursing, Post Basic Nur.
Management: BBA, MBA, B.Com, M.Com
Engineering: B.Tech (CSE, Elect., Mech, Civil,Fire & Safety), M.Tech (CSE/IEM/ Energy Tech)
Comp. Science: BCA, MCA, B.Sc.(CS), M.Sc.(CS), DCA/PGDCA
Paramedical: BPT, BMLT, DMLT, OT/X-Ray
Agriculture: B.Sc.(Ag), M.Sc. (Agronomy) (Horticulture)
Education: B.Ed., D.Ed., BA B.Ed.*, B.Sc. B.Ed*
Polytechnic: Electrical, Mechanical, Civil, Comp. Sci.
ITI: Electrician, Fitter, COPA
Science: B.Sc. (PCMBZ/Biotech/ Microbio/CS), M.Sc. (Maths/CS/Chemistry/ Physics/Bio.)
Social Work: BSW, MSW
Lib. Science: B.Lib., M.Lib.
Art & Humanities: BA (Plain/ Journalism & mass communication), MA (Hindi/Eng./Psyco./Sociology Political Sci./Eco./Education)
Hotel Mgmt: BHMCT, Hotel Mgmt
Hospital Mgmt: MBA in Hospital & Health Care Management
Ph.D: All Subjects
Diploma Courses: YOGA | Beauty & Wellness, Diet. & Nut. | Fitness Mgmt
For Admission & Enquiry
Gram: Kanawati, Neemuch (M.P.) Call: 9827550959, 7771001344
www.gyanodayauniversity.ac.in | www.gyanodayanmh.in

आज ही बुक करें अपना Zelo इलेक्ट्रिक स्कूटर, घर ले जाए
मात्र रु 45930/- रु 41,990/-
में वो भी 1 साल की बैटरी वारंटी के साथ
मात्र रू.41,990/- इलेक्ट्रिक स्कूटर की रेंज से शुरु ...
INTRODUCING KNIGHT+
#BuiltToPerform
RTO मॉडल मात्र
रु 81000/- रु 76000/-*
(माइलेज 80-100 कि.मी.)
3 साल बैटरी की वारंटी के साथ
Zelo Electric Scooter
बंगला नं. 23, IDBI बैंक के सामने,
Lic रोड़, नीमच (म.प्र.)
मो. 940742399, 8770664866

SHRI S.R. GROUP OF COLLEGES
Admission Open 2025-26
धर्मेश तिवारी Director
निरंजन (राजू) तिवारी पूर्व अध्यक्ष - कृषि उपज मंडी समिति, नीमच
MBA 2 Year | B.Pharma 4Year | D.Pharma 2 Year
B.Ed. 2 Year | D.Ed./STC 2 Year | B.Sc. B.Ed. 4 Year | B.A. B.Ed. 4 Year
Singoli Road, Newad, Neemuch (M.P.) City Office : Indira Nagar, PG College Road, Neemuch (M.P)
8817326635, 8109927774 shrisrcollege collegesr90@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक ऐश्वर्य शर्मा के लिए माँ भगवती प्रिन्टर्स बंगला नं. 23, आईडीबीआई बैंक के सामने, नीमच, जिला-नीमच, मध्यप्रदेश से मुदित एवं प्रकाशित। सम्पर्क: 9407423966। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र नीमच होगा।